संत सम्प्रदाय

भक्ति :- ईश्वर की उपासना करना मोक्ष प्राप्ति के लिए

- भक्ति की शुरुआत → दक्षिण भारत
- आदि गुरु → शंकराचार्य
- दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन के जनक → रामानुज
- उत्तरी भारत में ,, ,, ,, ,, → रामानन्द जी
- राज० में भक्ति ,, ,, ,, → दादू दयाल जी | धन्ना जी
- अवतारवाद का उल्लेख → भागवत पुराण में

भक्ति → २ प्रकार होती है।

सगुण : जिसमें ईश्वर को साकार (स्वरूप) मानकर पूजा करना

निर्गुण : जो ईश्वर को निराकार मानकर पूजा करे

संत	→	मत
शंकराचार्य जी	→	अद्वैतवाद
रामानुज	→	विशिष्ठाद्वैतवाद
वल्लभाचार्य जी	→	शुद्धाद्वैतवाद
निम्बार्काचार्य	→	द्वैताद्वैत वाद

सगुण भक्ति :

↓

Trick → नानी गौरा हनी शैव खाते है।

- ना → नाथ सम्प्रदाय
- नी → निम्बार्क सम्प्रदाय
- गौ → गौड़ीय स०
- रा → रामानुज
- रा → रामानन्द
- नी → निष्कलंक सम्प्रदाय
- शै → शैव
- व → वल्लभ सम्प्रदाय

नोट : एकमात्र संत/सम्प्रदाय चरणदास जी थे जिन्होंने ईश्वर की उपासना निर्गुण/सगुण दोनों रूप में की

नाथ सम्प्रदाय : नाथ मुनी

- सन्त → मत्स्येन्द्र नाथ → सांझीया मन्दिर → उदयपुर
- गोरखनाथ जी → हठ योग प्रणाली दी थी
- इस सम्प्रदाय मे प्रमुख ९ गुरु → (नवनाथ)
- जसनाथ जी : दैवीय शक्ति की जगह योग पर बल दिया

नोट
- योग दिवस → 21 जून
- योगासन के देवता → कल्लाजी राठौड़.

→ नाथ सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ → योगिनी कौल

राज० मे प्रमुख पीठ → मान मन्दिर महामन्दिर जोधपुर
↳ 84 खम्भे का मन्दिर

→ देव आयसनाथ ने भविष्यवाणी की "मारवाड़ का राजा मान सिंह बनेगा"
उद्घोष → "अलख निरंजन"

मसानिये जोगीयों का तीर्थस्थल → अरना गांव → जोधपुर
" " गुरुद्वारा → ढिकाई गांव

काल बेलिया जाति के गुरु → "कानपानाथ"

निम्बार्क सम्प्रदाय :

↳ संस्थापक → निम्बार्काचार्य

↳ ग्रन्थ → वेदान्त परिजात

↳ अन्य नाम : निम्बावत, हंस, निमावत, परीजिता सम्प्रदाय

↳ राज० मे प्रमुख पीठ → सलेमाबाद शहर रूपनगढ नदी → अजमेर

↳ 36 वें आचार्य परशुराम आचार्य ने बनवाई

विशेषता : गले मे गोपीचन्द की माला

↳ माथे पर अर्द्धचन्द्राकार बिन्दु अंकित

↳ युगल स्वरूप राधा / कृष्ण की पूजा

↳ राधा को भगवान कृष्ण की पत्नी माना गया है

→ मुगलकाल मे हरिव्यास आचार्य सन्त थे

→ मेला → राधाष्टमी → भाद्रपद शुक्ल अष्टमी

→ भगवान कृष्ण "सखा" मानकर पूजा की जाती है

अन्य मन्दिर → कल्याणिया मन्दिर → किशनगढ

गौड़िय सम्प्रदाय :

गौ → गौड़िय सम्प्रदाय
गौ → गोविन्द भाष्य → प्रमुख ग्रन्थ
गौ → गौरांग महाप्रभु चैतन्य महाप्रभु → संस्थापक
गौ → गोविन्द देव जी मन्दिर
गौ → गोपीनाथ मन्दिर
नोट → गौसाई संघ की स्थापना → गौरांग महाप्रभु

प्रमुख पीठ → आमेर जयपुर
↳ विग्रह पूजन होता है

शीश की पूजा → गोविन्द देव जी का मन्दिर → जयपुर
धड़ की पूजा → गोपीनाथ जी मन्दिर → ब्रह्मपुरी जयपुर
चरण पादुका की पूजा → मदनमोहन मन्दिर → करौली

↳ आमेर का कछवाह राजवंश स्वयं को गोविन्ददेव जी का दीवान मानते है

पुजारी → विष्णुस्वामी कहते है।

रामानुज सम्प्रदाय :→ रामावत | श्री सम्प्रदाय

- ↳ दक्षिण भारत में प्रमुख → भक्ति आन्दोलन के जनक
- ↳ संस्कृत के विद्वान
- ↳ गुरू → यमुनाचार्य
- ↳ मत → विशिष्टाद्वैतवाद
- ↳ प्रमुख पीठ → गलता जयपुर
- ↳ ग्रन्थ → श्री भाष्य

रामानन्द सम्प्रदाय

↳ उत्तरी भारत में भक्ति आन्दोलन के जनक
↳ हिन्दी भाषा में उपदेश देने वाले प्रथम सन्त
↳ उत्तर तोताद्री सम्प्रदाय भी कहा जाता है।
↳ प्रमुख पीठ → गलता जयपुर

पृथ्वीराज कछवाह - चतुरानाथ को कृष्णदास पयोहारी ने शास्त्रों में पराजित किया

गैंट → गलता :- गालव ऋषि की तपोस्थली, मंकी वैली, छोटी काशी

रामानन्द जी 12 शिष्य थे → सेना जी, सदनाजी, धन्ना, पीपा,
महिला शिष्या → सुरसुरा, पद्मनी

निष्कलंक सम्प्रदाय : संत मावजी

- जन्म → साबला गांव डूंगरपुर
- समाधिस्थल → शेषपुर → "
- ज्ञान प्राप्ति → नवाटापुरा गांव
- प्रमुख ग्रन्थ → चौपड़ा (भविष्यवाणी)
- वस्त्र → सफेद वस्त्र धारण करते हैं
- गले में तुलसी की माला पहनते हैं।

उपनाम → भगवान विष्णु का दसवा अवतार
कल्की अवतार
कृष्ण का अवतार

संत मावजी ने लसोड़िया आन्दोलन चलाया।

5 फीट ऊंचे खण्डित शिवलिंग
की पूजा की जाती है।

मा → मावजी ने 1727 को
मा → माही नदी के किनारे
मा → माघ पूर्णिमा के दिन → बैर्णेश्वर धाम की स्थापना की नवाटापुरा
गांव डूंगरपुर → ॥

4 इसे आदिवासियों का कुंभ, वागड़ का कुंभ कहा जाता है
संत मावजी की पुत्र वधु जनक कुमारी संत मावजी के लिए विष्णु
मन्दिर बनवाया जिसे सर्वधर्मसामान्य कहा जाता।
प्रमुख पीठ → बैर्णेश्वर धाम